भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड–XXVIII अंक–19 15 अक्टूबर, 2023

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः। अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः।।

मेरी उत्पत्ति को अर्थात् लीला से प्रकट होने को न देवता लोग जानते हैं और न महर्षिजन ही जानते हैं; क्योंकि मैं सब प्रकार से देवताओं का और महर्षियों का भी आदि कारण हूँ। **श्रीमद्भगवद्गीता 10/2**

गांधी जयन्ती समारोह

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली द्वारा दिनांक 2 अक्टूबर, 2023 को संस्थान के सेमिनार हॉल में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 154वीं जयन्ती एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की 119वीं जयन्ती के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पारम्परिक दीप प्रज्ज्वलन के साथ समारोह के कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। कार्यक्रम में संस्थान निदेशक, प्रो. रंगन बनर्जी एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। संस्थान समुदाय के लिए कार्यक्रम का सीधा (लाइव) प्रसारण किया गया।

निदेशक सम्बोधन (अनुदित सार)

संस्थान निदेशक प्रो. रंगन बनर्जी ने सभी को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयन्ती पर शुभकामनाएं दी। प्रो. बनर्जी ने कहा कि आज हमें शास्त्री जी एवं बापू जी के दृष्टिकोण एवं विचारों को याद करना चाहिए। उनकी सोच, आदतें एवं जीवन हमें सदियों तक प्रोत्साहित करते रहेंगे तथा आज की पीढ़ी के लिए यह उदाहरण स्वरूप है। हमें बापू जी के पदचिन्हों पर चलना चाहिए, परन्तु यह अत्यन्त कठिन कार्य है। बापू जी ईमानदारी की अखण्डता (Integrity of honesty) पर अत्यन्त जोर देते थे। एक बार स्कूल में जब बापू जी को अध्यापिका ने नकल करने को कहा तो उन्होंने मना कर दिया क्योंकि उन्हें ईमानदारी में दृढ़ विश्वास था। दूसरे, गांधी जी ने हमेशा प्रकृति के साथ समान्जस्य करके रहना सिखाया है उन्होंने टेक्नोलॉजी के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, अस्वच्छता आदि समस्याओं से निपटने के लिए प्रकृति के अनुरूप रहना सिखाया। गांधी जी ने कहा कि हमें सभी की जरूरतों को पूरा करना है परन्तु लालच को नहीं, क्योंकि उसका कोई अंत नहीं है। हमें अपने उपभोक्ता नीति को सीमित करना होगा ताकि हम प्रकृति के साथ सामन्जस्य स्थापित कर सकें। गांधी जी ने कहा था कि भारत गांवों में बसता है। आई.आई.टी. दिल्ली का उन्नत भारत अभियान इस दिशा में एक राष्ट्रीय पहल है। आई.आई.टी. दिल्ली के इस प्रयास में 16,000 गांव, 3,500 संस्थान, अनेकों विद्यार्थी, शोधकर्त्ता एवं संकाय शामिल हैं, जो देश के गांवों में पानी, बिजली, टेक्नोलॉजी आदि से संबंधित समस्याओं के समाधान में जुटे हुए हैं। हमारा प्रयास है कि उन्नत भारत की दूसरी पारी शुरू हो जिसमें हम गांवों में नवप्रवर्तन (इन्नोवेशन) से रोजगार के अवसर सृजित कर सकें ताकि लोग अवसरों की तलाश में गांवों से पलायन न करें। आई.आई.टी. दिल्ली के विजन में अकादमिक तथा अनुसंधान के साथ सामाजिक प्रभाव को शामिल करना होगा, ताकि भारत को हम पर गर्व हो। भारत के दूसरे पूर्व राष्ट्रपति एवं भारत रत्न लाल बहादुर शास्त्री जी वास्तव में एक विनम्र इंसान थे उन्होंने 'जय जवान जय किसान' के शब्द गढ़े। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जो मानते थे कि अनुसंधान मौखिक नहीं बल्कि व्यावहारिक होना चाहिए। अनुसंधान ऐसा होना चाहिए जो लोगों के जीवन में बदलाव ला सके। इन दो महापुरुषो ने हमें बताया कि हमें कैसा जीवन जीना चाहिए। हमें पुनः खुद को इनके प्रति समर्पित करना चाहिए। हममें

से प्रत्येक को यह सोचना होगा कि भारत वर्ष की सेवा के लिए हम उनके विचारों का उपयोग कैसे कर सकते हैं। मैं बस यही कहना चाहूंगा कि हम गांधीजी तथा लाल बहादुर शास्त्री जी के प्रति समर्पित रहें। आज आई.आई.टी. दिल्ली अपने आपको उनके दृष्टिकोण के साथ जीने तथा जीने का प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

इसके पश्चात् बी.आर.सी.ए. द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसके अन्तर्गत हिन्दी समिति द्वारा ''गीत नहीं गाता हूं'' कविता का गायन किया गया। म्यूजिक क्लब के विद्यार्थियों ने ''रघुपति राघव राजा राम'' द्वारा राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि प्रदान की। फोटोग्राफी तथा फिल्म क्लब ने महात्मा गांधी जी तथा शास्त्री जी के जीवन पर एक लघु चलचित्र प्रस्तुत किया गया। पेन्टिंग तथा प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता भी की गई तथा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। संस्थान के उत्कृष्ट सफाईकर्मियों को सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् संस्थान परिसर के निवासियों द्वारा ''मुझ में बापू'' फेंसी ड्रेस एवं ''मै पल दो पल का गांधी हूं'' आदि प्रतियोगिता आयोजित की गई। अंत में बी.आर.सी.ए. के महासचिव कुशाल गुप्ता के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन किया गया।

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2023/201301 दिनांक 03.10.2023 के अनुसार **प्रो. रोसन देबबर्मा** ने 25.09.2023 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड–I) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt-II./2023/203712 दिनांक 10.10.2023 के अनुसार **श्री सक्षम सारस्वत** ने 28.08.2023 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–5 में प्रशासनिक सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023/198331 दिनांक 26.09.2023 के अनुसार **डॉ. मनोबाला टी.,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 03.10.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. मनोबाला टी. को 03.10.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-2/2023//196022 दिनांक 14.09.2023 के अनुसार **श्री राजीव कुमार दास,** तकनीकी सहायक (सेन्स केन्द्र) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 14.09.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री राजीब कुमार दास को 14.09.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-2/2023/203565 दिनांक 09.10.2023 के अनुसार **श्री वैभव कोराटिया,** आतिथ्य सहायक (छात्र संकायाध्यक्ष कार्यालय) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 09.10.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री वैभव कोराटिया को 09.10.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2023/194761 दिनांक 14.09.2023 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) नेहा तनेजा,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (रसायन विज्ञान विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 18.09.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ (सुश्री) नेहा तनेजा को 18.09.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2023/196849 दिनांक 26.09.2023 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) सोनल श्रीवास्तव,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (जैव रासायनिक इंजीनियरी एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 18.10.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. (सुश्री) सोनल श्रीवास्तव को 18.10.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया जाएगा।

गुरू नानक सत्संग

गुरू नानक सत्संग के प्रधान से प्राप्त जानकारी के अनुसार दिनांक 23 अगस्त, 2023 को आयोजित चुनाव में निम्नलिखित कार्यकारी सदस्यों को सर्वसम्मति से चयनित किया गया है।

नई समिति निम्नानुसार हैः–

1.	श्री मनजीत सिंह	प्रधान
2.	श्री जी.एस. कोहली	सचिव
3.	श्री रणवीर सिंह	सह सचिव
4.	प्रो. एस.पी. सिंह	कोषाध्यक्ष
5.	प्रो. पी.के. सक्सेना	लेखा परीक्षक

कार्यकारी सदस्य

1. प्रो. पी.एस. जस्सल, 2. प्रो. अमित मेहन्दीरत्ता, 3. प्रो. हरपाल सिंह, 4. श्री मनजीत सिंह, 5. श्री मनप्रीत सिंह, 6. श्री गुरूदीप सिंह, 7. श्री सुरेन्द्र कुमार, 8, सुश्री हरप्रीत कौर, 9. सुश्री पूर्णिमा काम्बोज, 10. श्री खुशप्रीत सिंह, 11. देवेन्द्र कुमार, 12. श्री गुनदीप सिंह, 13. राजवीर सिंह, 14. दतार सिंह

युद्ध और शांति

जी–20 में शामिल देश रूस के सुप्रसिद्ध लेखक लियो टालस्टाय की कृति 'युद्ध और शांति' विश्वप्रसिद्ध उपन्यास ही नहीं, बल्कि इतिहास की साहित्यिक परिघटना है। पढ़िए, नेपोलियन बोनापार्ट के काल में फ्रांस के रूस पर आक्रमण पर केंद्रित इस उपन्यास का अंश.....

'हे भगवान, कितना जोरदार हमला किया है आपने'। कमरे में दाखिल होने वाले प्रिंस वसीली ने ऐसे स्वागत से जरा भी परेशान हुए बिना जवाब दिया। वह कढ़ाईदार दरबारी वर्दी, लंबे मोजे और बूट पहने था, उसके सीने पर पदम चमक रहे थे और चपटे चेहरे पर शांति का भाव था। वह ऐसी निखरी हुई फ्रांसीसी बोलता था, जिसका हमारे दादा–परदादा केवल बोलचाल में ही उपयोग नहीं करते थे, बल्कि जिसमें सोचते–विचारते भी थे। वह धीरे–धीरे और सरपरस्ती के ऐसे अंदाज में बोलता था जो ऊंची सोसाइटी और राज दरबार में लंबे अरसे तक काम कर चुके महत्वपूर्ण व्यक्ति का विशेष लक्षण होता है। आन्ना पाव्लोव्ना के निकट जाकर उसने उसका हाथ चूमा और उसके सामने शालीनता से सोफे पर बैठ गया।

'मेरी प्यारी मित्र, सबसे पहले तो मुझे यह बताइए कि आपकी सेहत कैसी है? मेरे दिल को तसल्ली दीजिए।' उसने अपनी आवाज को बदले बिना और ऐसे लहजे में कहा जिसमें शिष्टता और सहानुभूति की ओट में उदासीनता, यहां तक कि उपहास की भी झलक मिल रही थी।

'जब आदमी नैतिक रूप से व्यथित हो तो उसकी सेहत अच्छी कैसे हो सकती है? हमारे जमाने में भावुक व्यक्ति शांत कैसे रह सकता है?' आन्ना पाव्लोव्ना ने जवाब दिया। 'मैं उम्मीद करती हूं कि आप अपनी पूरी शाम यहीं बिताएंगे ?'

'लेकिन इंग्लैंड के राजदूत की पार्टी ? आज तो बुधवार है। मुझे वहां अपनी सूरत तो दिखानी ही चाहिए', प्रिंस वसीली ने जवाब दिया। 'मेरी बेटी मुझे साथ ले जाने के लिए यहां आएगी'।

'मेरा विचार था कि आज की पार्टी स्थगित कर दी गई है। सच कहती हूं कि ये सभी जश्न और आतिशबाजियां बर्दाशत के बाहर होती जा रही हैं।'

'अगर उन्हें यह मालूम होता कि आप ऐसा चाहती हैं तो पार्टी स्थागित कर दी गई होती।' प्रिंस वसीली ने मानो चाबी भरी हुई घड़ी की भांति बरबस ही यह कह दिया। वह ऐसी बातें कहता रहता था, जिनके बारे में खुद भी यह नहीं चाहता था कि कोई उन पर विश्वास करे।

'मुझे तंग न करें। नोवीसील्त्सेव के पुत्र के बारे में क्या तय किया गया है ? आप तो सब कुछ जानते ही हैं।' '

अब आपसे इसके बारे में क्या कहूं ? प्रिंस वसीली ने रूखे और नीरस ढंग से जवाब दिया। और आगे कहा, 'क्या तय किया गया है ? यही तय किया गया है कि बोनापार्ट अपनी लुटिया डुबो चुका है और लगता है कि हम भी ऐसा ही करने जा रहे हैं।'

प्रिंस वसीली हमेशा किसी पुराने नाटक में अपनी भूमिका के शब्दों को बोलने वाले अभिनेता की तरह किसी उत्साह के बिना अपनी बात कहता था। इसके विपरीत, 40 वर्ष की हो जाने के बावजूद आन्ना पाव्लोव्ना बड़ी सजीव और जोश से ओत–प्रोत थीं। ऊंची सोसाइटी में ऐसा जोश दिखाना उसकी आदत बन गई थीं। कभी–कभी, वह अनचाहे मन से भी केवल इसीलिए अपने को उत्साही प्रकट करती कि उसे इस रूप में जानने वाले लोगों को निराशा न हो। आन्ना पाव्लोव्ना के चेहरे पर निरंतर खेलती रहने वाली मुस्कान, जो बेशक अब उसके मुरझाए नाक–नक्शे पर जंचती नहीं थी, लाड़–प्यार से बिगड़े हुए बच्चे की भांति उसकी उस प्यारी त्रुटि को जाहिर करती थी, जिससे वह मुक्ति नहीं पाना चाहती थी, पा भी नहीं सकती थी और ऐसा करने की जरूरत भी नहीं समझती थी।

राजनीतिक गतिविधियों के बारे में बातचीत के दौरान आन्न पाव्लोव्ना गुस्से में आग–बबूला हो उठी, ' ओह, आस्ट्रिया के बारे में आप मुझे कुछ न ही कहें। शायद यह मेरी समझ के बाहर की बात हो, लेकिन आस्ट्रिया ने न तो कभी जंग चाही और न अब चाहता है। वह हमारे साथ विश्वासघात कर रहा है। सिर्फ रूस को ही यूरोप की रक्षा करनी होगी। हमारे उपकारी सम्राट अलेक्सांद्र अपने इस कर्तव्य को जानते हैं और इसे पूरा करेंगे। बस यही एक चीज है, जिस पर मैं विश्वास करती हूं। हमारे दयालु और अद्भुत सम्राट को संसार में महानतम भूमिका अदा करनी है। वह इतने परोपकारी तथा भले हैं कि भगवान अवश्य उनकी सहायता करेंगे। केवल हमें ही धर्मनिष्ठ लोगों के रक्त का कलंक घोना होगा। मैं आपसे पूछती हूं कि हम किस पर भरोसा कर सकते हैं ? अपनी व्यापारिक प्रवृत्ति के कारण इंग्लैंड हमारे सम्राट अलेक्सांद्र की आत्मा की उदात्तता को नहीं समझेगा और समझ भी नहीं सकता। वह हमारी सभी कार्रवाइयों के पीछे किसी गुप्त उद्देश्य को देखना, उसे खोजना चाहता है। नोवोसील्त्सेव को क्या जवाब मिला ? कुछ भी तो नहीं। अंग्रेज हमारे सम्राट के आत्मत्याग को, जो अपने लिए कुछ नहीं चाहते और दुनिया की भलाई के लिए सब कुछ चाहते हैं, नहीं समझे और समझ भी नहीं सकते। किस चीज का वादा किया उन्होंने ? किसी भी चीज का नहीं। .... और अगर कोई छोटा–मोटा वादा किया भी तो वह भी पूरा नहीं होगा। मैं तो भगवान और प्यारे सम्राट के उच्च लक्ष्य पर ही भरोसा करती हूं। वह यूरोप की रक्षा करेंगे।' वह अपने जोश का मजाक उड़ाती सी मुस्कान के साथ

अचानक चुप हो गई।

प्रिंस वसीली ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मेरे विचार से अगर हमारे प्यारे वित्सेनगेरोदे की जगह आपको भेजा जाता तो आप धावा बोलकर प्रशा के महाराजा की सहमति प्राप्त कर लेतीं। क्या कमाल हासिल है आपको बोलने में। आप मुझे चाय का प्याला देने की कृपा तो करेंगी ? आन्ना पाव्लोव्ना ने शांत होते हुए कहा, 'अभी प्रसंगवश, आज मेरे यहां दो बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति आने वाले हैं। वाइकोंट मोर्तेमार, जिसकी फ्रांस के श्रेष्ठ रोहांस परिवार के माध्यम से मोंतमोर्रेसी से रिश्तेदारी है। वह एक असली फ्रांसीसी प्रवासी हैं, एक श्रेष्ठ फ्रांसीसी। इसके अलावा पादरी मोरियो भी आ रहे हैं। इस बहुत ही गहन विचारक को तो आप जानते ही हैं ? वह सम्राट से मिला था। आपको मालूम है न ?

'मुझे इनसे मिलकर खुशी होगी, प्रिंस वसीली ने कहा। 'लेकिन यह बताइए...' उसने लापरवाही के ऐसे अंदाज में अपनी बात जारी रखी मानो अभी कुछ याद आ गया हो, जबकि वास्तव में इसी चीज के बारे में पूछने के मुख्य उद्देश्य से वह यहां आया था, 'क्या यह सच है कि साम्राज्ञी बैरन फुंके को प्रथम सेक्रेटरी के रूप में वियना में नियुक्त करवाना चाहती है ? वह तो हर दृष्टि में घटिया आदमी प्रतीत होता है। 'प्रिंस वसीली अपने बेटे को यही पद दिलवाना चाहता था, जिसे बैरन को देने की कोशिश की जा रही थी।

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक 3.9.2023

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागजात

1 सामान्य आदेश/General Orders
2 संकल्प/Resolution
3 परिपत्र/Circulars
4 नियम/Rules
5 प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन/Administrative or other reports
6 प्रेस विज्ञप्तियाँ/Press Release/Communiques
7 संविदाएँ/Contracts
8 करार/Agreements
9 अनुज्ञप्तियाँ/Licences
10 निविदा प्रारुप/Tender Forms
11 अनुज्ञा पत्र/Permits
12 निविदा सूचनाएँ/Tender Notices
13 अधिसूचनाएँ/Notifications
14 संसद के समक्ष रखे जाने वाले/प्रतिवेदन तथा कागज पत्र/Reports and documents to be laid before the Parliament

राजभाषा हिन्दी के अनुसार राज्यों का वर्गीकरण

क्षेत्र क– बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।

क्षेत्र ख– गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

क्षेत्र ग– खंड (1) और (2) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र।

राजभाषा नियम, 1976 नियम 5

राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर आवश्यक रूप से हिंदी में दिए जाएं (अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों की पावती हिंदी में भेजे)। अतः सभी विभाग/केन्द्र/अनुभाग/प्रकोष्ठ/एकक आदि को सूचित किया जाता है कि वे हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों का उत्तर केवल हिंदी में दें और उनका रिकॉर्ड रखें। इसका उल्लंघन होने पर संबंधित अधिकारी जिम्मेदार होंगे।

जे.ई.ई. (एडवांस्ड) 2024 के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/AREG/4(3)/2023/186846 दिनांक 17.08.2023 के अनुसार निदेशक महोदय ने तत्काल प्रभाव से जे.ई.ई. (एडवांस्ड) 2024 के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के रूप में निम्नलिखित संकाय सदस्यों को नियुक्त किया है:–

1. प्रो. राजेन्द्र एस. ढाका भौतिकी विभाग	अध्यक्ष, जे.ई.ई. (एडवांस्ड) 2024
2. प्रो. सूर्य प्रकाश सिंह प्रबन्ध अध्ययन विभाग	उपाध्यक्ष, जे.ई.ई. (एडवांस्ड) 2024

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com